REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

भारतीय समाज की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अनुशीलन (मादक द्रव्य व्यसन के विशेष संदर्भ में)

मैनपाल
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, डा.भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.).

सारांश :

भारत वर्ष को गौरवशाली अतीत व समृद्ध संस्कृति के कारण कभी जगद्गुरु का दर्जा प्राप्त था, वही आज भारत अपने जीवन मूल्यों व आदर्शो को भूलकर दुष्प्रवृत्तियों के कारण पतन की ओर फिसलता जा रहा है। वर्तमान में ईमानदारी व सत्यनिष्ठता का स्थान बेईमानी व भ्रष्टाचार ने हड़प लिया है। अध्यात्म व त्याग को छोड़कर हम भौतिकवाद की अंधी दौड़ में शामिल हो गये है। दुध, दही, मखन आदि के आधार पर कुश्ती, पहलवानी का दम भरने वाले युवाओं का आज मादक द्रव्यों व सुरा पान के कारण खुद का दम निकला पड़ा है। महिलाओं को देवी का अवतार समझने वाला देश आज उसके ही चीरहरण को आमादा है। बच्चों को भगवान समझने वाला देश उनको माँ की कोख में ही खत्म करने पर तुला है। आश्रम व्यवस्था के अनुरूप गुरुकुल में शिक्षा लेने वाला युवा आज मूल्य विहीन व दिशा विहीन शिक्षा प्राप्त कर अपराधों की अंधेरी गुफा में जा रहा है। गीता का कर्मवाद, अकर्मणता में बदलता जा रहा है। एकता, समरसता, सहिष्णुता की मशाल जलाने वाला भारत आज साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद की मार झेल रहा हैं। पुन: विश्वगुरु बनने की चाहत पाले भारत में इस प्रकार के परिवर्तनों को प्रगतिशील नहीं कहा जा सकता है। विज्ञान व प्रोद्योगिकी में तो भारत ने तरक्की कर ली लेकिन सामाजिक क्षेत्र में अभी बहुत कुछ करना बाकी हैं। आज के समय भारत के अध्यात्म और पश्चिमी के विज्ञान के समन्वय द्वारा समस्या—समाधान की आवश्यकता है। अगर समय रहते इन सामाजिक समस्याओं का समाधान नही किया गया तो हम भविष्य में बेहतर समाज की कल्पना नहीं कर सकते।

प्रस्तावना :

भारत उन प्रमुख सभ्यताओं में से एक है जहां ईरान, मेसोपोटामिया, यूनान और मिस्र की तरह सभ्यता व संस्कृति का आरम्भ और विकास हुआ। अपनी समृद्ध संस्कृति व विरासत के कारण भारतीय समाज विश्व में अलग पहचान रखता है। यहां की वेदिक संस्कृति में अध्यात्म व विज्ञान का अनुपम मिश्रण, व्यक्तित्व के सर्वांगिण विकास के लिए आश्रम व्यवस्था, समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिये वर्णव्यवस्था प्रचलित रही है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत के ज्ञान की प्रागंसिकता सदियों से कायम है। इन सब कारणों से भारत को जगद्गुरु का दर्जा प्राप्त था। भौगोलिक व आर्थिक सम्पन्नता के कारण सोने की चिड़िया कहा जाता था। समय के साथ भारतीय संस्कृति व समाज में हूण, सीथियन, इस्लामिक, इच, पुर्तगाली, तुर्की, पारसी, यूनानी आदि संस्कृति के तत्वों का मिश्रण होता रहा है जो भारतीय समाज की बहुलवादी व बहुरंगी संस्कृति, सामंजस्यवादी दृष्टिकोण व धार्मिक सहिष्णुता का परिचायक है।[१] इन सभी सांस्कृतिक तत्वों ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया। इस प्रकार के सांस्कृतिक मिश्रण से भारतीय समाज परिवर्तित होता रहा है। सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक परिघटना है इससे भारतीय समाज भी अछुता नहीं रहा है। सामाजिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप वेदिक काल से लेकर उत्तर आधुनिकता के इस

दौर तक भारतीय समाज उतार—चढाव से गुजरा है। लगभग ५००० वर्ष की समयावधि में अनेक सामाजिक समस्याओं का उद्भव होता रहा है, इनमें से कुछ समय के साथ समाप्त हो गई तो कुछ आज भी न्युनाधिक मात्रा में विद्यमान है। अनेक सामाजिक समस्याएँ गौण हो गई तो कुछ अपने भंयकर रूप में अंगद के पैर के समान जमी हुई है। वेदिक युग की वर्णाश्रम व्यवस्था जो भारतीय समाज व संस्कृति की सर्वाधिक सारगर्भित विशेषता रही है।[२] उत्तर—वेदिक काल से वर्णाश्रम व्यवस्था विकृति का शिकार बन गई। इस विकृति से भारतीय समाज के आध्यात्मिक पक्ष का पतन प्रारम्भ हो गया तथा इनके स्थान पर धार्मिक आडम्बर प्रबल होते गये। महात्मा बुद्ध व महावीर स्वामी ने आध्यात्मिकता को पुन: स्थापित करने का प्रयास किया लेकिन आंशिक रूप से ही सफल हो पाये। बाह्य संस्कृतियों के सम्पर्क व अपनी संस्कृ ति के आंतरिक कारणों से सामाजिक समस्याएँ हर काल में विद्यमान रही है। जटिल प्रकृति के कारण सामाजिक समस्याओं की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती।[३] फिर भी कहा जा सकता है कि सामाजिक समस्याएँ ऐसी स्थिति है जिसे समाज का एक बड़ा भाग अवांछित मानता है व नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति को सामुहिक प्रयासों द्वारा बदला जा सकता है।[४] प्राचीन व मध्य काल में जातिवाद, अस्पृश्यता, बाल विवाह, धर्म परिवर्तन, सती प्रथा, महिलाओं की दुर्दशा, बेगार, धार्मिक कर्मकाण्ड जैसी समस्याएँ अपने चरम पर थी। इनके खिलाफ किसी ने आवाज उठाने की हिम्मत नहीं दिखाई। ब्रिटिश काल में पहली बार इन सामाजिक समस्याओं पर समाज सुधारकों व ब्रिटिश सरकार द्वारा कई प्रहार किये गये तथा जिसके परिणामस्वरूप इनमें सुधार होना प्रारम्भ हुआ। ये प्रयास आजादी के बाद भी जारी रहे। ब्रिटिश काल व आजादी के बाद संवैधानिक प्रावधानों के कारण भारतीय समाज परम्परागत रूढ़ीवादिता को छोड़ कर आधुनिकता की ओर अग्रसर होने लगा, जिससे कुछ परम्परागत सामाजिक समस्याओं में कमी दर्ज की गई लेकिन कुछ नये प्रकार की समस्याओं से रूबरू होना पड़ा जो आज भी दस्तुर जारी है।

भारतीय समाज अब परम्पराओं का चोला उतार कर आधुनिकता की खोल में प्रवेश करने की प्रक्रिया में हैं। वैश्वीकरण, उदारीकरण व निजीकरण ने इसमें उत्प्रेरक का कार्य किया है। इसका परिणामस्वरूप भारतीय समाज परम्परा व आधुनिकता के द्वन्द्व के दौर से गुजर रहा है। इस दौर में कुछ पुरानी सामाजिक समस्याओं का स्वरूप बदला है तो कुछ नवीन सामाजिक समस्याएँ सामने आ खड़ी हुई है। वर्तमान में हमारा समाज पीढ़ी—अंतराल, मादक द्रव्यों का दुरूपयोग, क्षेत्रवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता, दलित अत्याचार, छुआछुत, गरीबी, निरक्षरता, बेरोजगारी, युवा असंतोष, जनसंख्या वृद्धि, दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, बाल—श्रम, वेश्यावृति, मानव व्यापार, भ्रुण हत्या, भीड़ हिंसा(मॉब लिचिंग), महिला उत्पीड़न, अपराध, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं से त्रस्त है।

इन सामाजिक समस्याओं का स्वरूप व कारण एक जैसे नहीं हैं इनमें से कुछ सामाजिक समस्याएँ पश्चिमीकरण व भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण, तो कुछ परम्पराओं के कारण, तो कुछ अन्य कारणों से उत्पन्न हुई हैं। पश्चिमीकरण से भौतिकवाद को प्रोत्साहन मिला। भौतिकवाद से जीवनशैली व सामाजिक मूल्यों में हो रहे बदलाव के कारण अनेक सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुई है।[५] भारत में सदा ही मानवीय व नैतिक मुल्यों को महत्व दिया जाता रहा है लेकिन आधुनिकता व पश्चिमीकरण की अंधी दौड़ के कारण ये मूल्य दरकिनार कर दिये गये हैं। उपभोगतावादी संस्कृति के अनुसरण से मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ हैं।[६] मादक द्रव्यों का अत्यधिक सेवन, अपराध, भ्रष्टाचार, वेश्यावृति, पीढ़ी अंतराल आदि समस्याओं के मूल में प्रत्यक्ष—अप्रत्यक्ष रूप से भौतिकवाद व उपभोक्तावाद है। आज सभी येन केन प्रकारेण ज्यादा से ज्यादा और जल्द से जल्द सुख सुविधाएं जुटा लेना चाहते है इसके लिये साधन की पवित्रता कोई मायने नहीं रखती है। साधनों की अपवित्रता के कारण सामाजिक मूल्यों की अवहेलना होने से समस्याएँ विद्यमान हैं। भौतिकवाद के कारण अधिकाधिक इन्द्रिय सुख की लालसा में मादक द्रव्यों का दुरूपयोग, वेश्यावृति व दुष्कर्म के मामलों मे तीव्र वृद्धि हो रही हैं। उदारीकरण से पहले तक मादक द्रव्यों का सेवन सीमित मात्रा में होने के कारण इसे सामाजिक समस्या की बजाय व्यक्तिगत समस्या ही माना जाता था लेकिन वर्तमान में मादक द्रव्य व्यसन एक गंभीर समस्या धारण कर चुकी है। मादक द्रव्यों का स्वरूप भी बदलता जा रहा है, पहले जहां मादक द्रव्य व स्वापक औषधि अधिनियम के तहत इक्का दुक्का ही मामले दर्ज थे अब उनकी संख्या बढ़कर देश के एक जिले हनुमानगढ़ में ही २०१६ में ४६ से

बढ़कर २०१९ में १९४ हो गई है।[७] सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय के अनुसार देश में १.१६ करोड़ किशोर (१० से १७ आयु वर्ग) विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों का सेवन करते है तो २१.३० करोड़ वयस्क मादक द्रव्य सेवन के शिकार है।[८] नेशनल ड्रग डिपेंडेंस ट्रीटमेंट सेंटर के एक सर्वे के अनुसार पंजाब, त्रिपुरा व चंडीगढ़ की आधी से ज्यादा पुरुष आबादी मादक द्रव्यों की आदी है।[९] मादक द्रव्यों के चंगुल में महिलाएं भी फंसती जा रही है, महिलाओं ने पश्चिमी संस्कृति को आदर्श मानते हुये मादक द्रव्यों का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया है।

उपरोक्त समस्याओं के लिये हम परिवर्तित जीवनशैली को उत्तरदायी मान सकते है, लेकिन कुछ समस्याएँ हमारी परम्पराओं के कारण भी है। भारत में परम्परा व आधुनिकता के बीच अत्यधिक द्वन्द्व है। हम लाख आधुनिक होने का दावा करे लेकिन हम अभी भी रूढ़िवादी परम्पराओं को ढ़ो रहे है। हम धार्मिक कर्मकांडों व अंधविश्वासों से मुक्त नहीं हुये हैं। इनके कारण समाज में अनेक समस्याएँ बनी हुई हैं। तथाकथित बाबाओं के दरबारों में लगने वाली भीड़, जादू–टोना करने वालों की कतार, झाड़–फुंक से रोगों का निदान करने, मूर्तियों को दुध पिलाने की घटनायें, डायन समझ कर महिलाओं पर अत्याचार करना, बेटे की चाह में कन्या भ्रूण–हत्या, धार्मिक आधार पर कुछ जातियों के प्रति भेदभाव व अस्पर्शता की भावना, दहेज के नाम पर महिलाओं का प्रताड़ित करना व हत्या करना, पुण्य के नाम पर मृत्यु भोज पर अनावश्यक खर्च करना आदि भारतीय समाज के रूढ़िवादिता को स्पष्ट तौर पर दर्शाते है। कुछ सामाजिक समस्याएँ भारत के विशाल भूभाग, अत्यधिक जनसंख्या, बहुलवादी समाज के कारण है लेकिन राजनैतिक व आर्थिक तत्वों के मिश्रण से इन समस्याओं ने विकराल रूप धारण कर लिया है। क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद जैसी समस्याएँ वैसे तो सदा से चली आ रही है लेकिन दलगत राजनीति ने इनमें आग में घी डालने का कार्य किया है। राजनैतिक दल सत्ता–सुख भोगने के लिये इनके नाम पर वोट–बैंक की राजनीति करते हुये समाज को खोखला व विक्षिप्त बनाने का कार्य कर रहे हैं।

सामाजिक समस्याओं ने भारतीय समाज को विकृत करने का कार्य किया है। इन सब समस्याओं के पीछे हमारी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनेतिक व्यवस्था का अहम योगदान रहा हैं। इस बात में कोई शक नहीं है कि हमारी प्राचीन सामाजिक व्यवस्था काफी सुविकसित थी, जिसमें बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों को जीवनयापन की आदर्श स्थिति उपलब्ध थी। इसमें हमारे जीवन व आध्यात्मिक मूल्यों का अहम योगदान रहा है। वर्तमान में हमने अपने आदर्शों को तो त्याग दिया लेकिन दिखावे के नाम पर अंध विश्वास को अपना लिया, इसका परिणाम यह रहा कि हम आध्यात्मिक से अंधधार्मिक बन गये। दुसरी तरफ हम आधुनिकता के नाम पर बिना सोचे–समझे बंद आंखों से पश्चिमी भौतिकवादी संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप हम पश्चिमी संस्कृति की अच्छाई के स्थान पर उनकी बुराइयों को ग्रहण कर रहे हैं। इस कारण से भारतीय समाज एक तरफ तो अपनी स्वयं के आदर्श व अच्छाई को त्याग रहा है तो दुसरी तरफ भौतिकवाद के नाम पर बुराइयों को अपना रहा है। इस प्रकार से एक बेहतर समाज व बेहतर भारत का निर्माण नहीं कर सकते ।

एक बेहतर समाज के लिये निर्माण के लिये हमें अपने मूल रास्ते पर लोटना होगा, जो वेदों व बुद्ध पुरूषों ने बताया है तथा उन बुराइयों को त्यागना होगा जो हमने धार्मिक आडम्बर के नाम पर एकत्रित कर रखी है। हमने जो पवित्रता, ईमानदारी, नैतिकता, मूल्यों की गलत परिभाषा स्थापित कर ली है, इन्हें पुनः स्थापित करना होगा। भारतीय समाज की उस व्यवस्था में परिवर्तन करना होगा जिसमें भ्रष्टाचार को शिष्टाचार बना लिया है, बेईमानी को आदर्श मान लिया है, अनैतिकता को फैशन मान लिया है, अपराधियों को प्रतिष्ठित व्यक्ति समझ लिया है, व्यक्तित्व के स्थान पर दिखावे को स्वीकार कर लिया है, मौलिकता के स्थान पर प्रतिलिपि को असल समझ बैठे है। हमें आधुनिकीकरण के नाम पर पश्चिमी कुड़ा–करकट एकत्रित करने की बजाय सोच– विचार कर पश्चिमी समाज की उपयोगी चीजें ही ग्रहण करनी होगी। हमें पश्चिम से उदारवाद, स्वतंत्रता, मानवतावाद व समतावाद, राष्ट्रीयता व एकीकरण की अवधारणा, तर्कशीलता, लोकतांत्रिकता, कर्म के प्रति पूजा का भाव सीखने की जरूरत है, न कि नग्नता, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, पिज्जा–बर्गर, व्यक्तिवाद व एकाकी जीवन।[१०] दुसरी तरफ छोड़ना होगा उन परम्पराओं को, अंधविश्वासों को, कूरीतियों को, ढ़ोग व पाखंड को, रूढ़ीवादिता को, आडम्बरों को, जो धर्म के नाम पर हमने एकत्रित कर लिये हैं। ये भारतीय समाज के मूल तत्व नहीं थे लेकिन आज हमारे

समाज की नींव को खोखला कर रहे हैं। हमें लोटना होगा अपनी जड़ों की ओर, पहचान करनी होगी अपनी गौरवशाली संस्कृति व सभ्यता की, जिसने सम्पुर्ण विश्व को अध्यात्म सिखाया। जब भारत का धर्म—अध्यात्म और पश्चिमी के विज्ञान का सही मिश्रण होगा तभी एक बेहतर समाज का सपना साकार होगा।

संदर्भ सुची :—

1. जी. एल. शर्मा, सामाजिक मुद्दे, रावत प्रकाषन (2015), पेज न. 04
2. डॉ.कृष्णा कांत पाठक, भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, राजस्थान(2009), पेज 31
3. राम आहूजा, सामाजिक समस्याऐं, रावत प्रकाषन ,(2005), पेज न. 2
4. Horton, Paul B. and Gerald R. Leslie, The Sociology of Social Problems, New York : Appleton-Century - Crofts, 1955 p. 64
5. मोतीलाल गुप्ता, भारत में समाज, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, राजस्थान (चौदहवां संस्करण, 2009) पेज 507
6. Ronald B. Inden, Imagining India, Indiana University Press; 5th ed. edition (December 2001) page 188
7. कार्यालय पुलिस अधीक्षक, हनुमानगढ,राजस्थान।
8. Ministry of social justice and Empowerment, govt. of india, Magnitude of substance use in India, page 13
9. के.एल. शर्मा, भारतीय सामाजिक संरचना व परिवर्तन, रावत प्रकाशन (2006) पेज 36—37

मैनपाल
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, डा.भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.).